Tel. No.	Remarks
a	इस विद्यालय में आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। विद्यालय के भौतिक संसाधन यथा कमरे, फर्नीचर, प्रयोगशाला, इलेक्ट्रानिक उपकरण आदि बहुत सुसज्जित है तथा यहाँ शिक्षा का माहौल भी उच्च कोटि का है। विद्यालय में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रप्रेम तथा बच्चों को स्वावलम्बी बनाने हेतु यहाँ के अध्यापक बन्धु, प्रधानाध्यापक जी तथा प्रबन्ध तन्त्र सतत प्रयास रत हैं। विद्यालय आने वाले भविष्य में और उन्नति करे ऐसी मेरी कामना है। कैलाश नाथ वर्मा ASDM

Date	Name & Address	Tel. No.
28.11.13	कैलाश नाथ वर्मा (PCS) अपर उपजिलाधिकारी गोरखपुर	941545l-454

a

Remarks

आज मेरे द्वारा इस महाविद्यालय का प्रथम बार दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिसमें मैंने कम समय में मैंने शिक्षक प्रतिपुष्टि पत्र, बाह्य परीक्षकों द्वारा सुझाव, छात्रों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना इत्यादि इन सभी बातों को जाना जिससे मैं ये निःसंकोच कह सकता हूँ कि महाविद्यालय छात्रों के शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नयन के लिए सतत प्रयासरत है। महाविद्यालय को मेरी कोटिशः शुभकामनाएँ।

Date	Name & Address
19.4.14	डॉ. उपेन्द्र नाथ त्रिपाठी, कम्प्यूटर साइंस विभाग, दीदउ गो.वि.वि. गो.

a इस महाविद्यालय प्रांगड़ में प्रथम आगमन से ही प्रतीत हुआ कि एक शैक्षणिक संस्थान किस रूप में आकार लेता है अपनी पूरी सृजनात्मकता के साथ एवं अदम्य ऊर्जा के साथ। अद्भुत रूप से व्यवस्थित एवं अनुशासित! ढेरों साधुवाद!

[signature]

19.4.14

डॉ॰ अवनीश राय
अंग्रेजी विभाग
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर.

Visitors Book

a

Comments

इस महाविद्यालय की तरह यदि इस क्षेत्र के अन्य सभी शिक्षण संस्थायें हो जाए तो इस पूर्वांचल क्षेत्र की तस्वीर बदल जाए। इस महाविद्यालय के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनायें।

Haran
4.5.14

Date	Name & Address	Phone
4.5.14	डा० हरी शरण, प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, दी. द. उ. गो. विश्वविद्यालय गो०	993538954

	9889026688 a	कल्पनाशील नेतृत्व, प्रतिबद्ध और परिश्रमी सहयोगी.
		सब कुछ प्रशंसनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी.

4.5.14	हर्ष कुमार सिन्हा, एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग.	9889026688
	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर.	

a

Comments

मैं महाविद्यालय में पहली बार आया, यहां की सम्पूर्ण व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। सभी दृष्टियों से ऐसा महाविद्यालय दुर्लभ है। ओजस्वी प्राचार्य, कर्मनिष्ठ शिक्षकों एवं अनुशासनप्रिय विद्यार्थियों का ऐसा समन्वय दुर्लभ है। मैं महाविद्यालय के चतुर्दिक विकास की हृदय से कामना करता हूं।

[illegible signature]

Date	Name & Address	Phone
17-11-14	डा० राजेश कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर	9336414240

इस महाविद्यालय में मुझे दूसरी बार
आने का अवसर प्राप्त हुआ। अपने
नित्य विषयों के पठन-पाठन के अतिरिक्त
वैदिक संस्कृति तथा वैज्ञानिक सोच जैसे
विषय पर व्याख्यान करवाना इस महाविद्या०
के अग्रणी सोच को प्रदर्शित करता है।
इन व्याख्यानों से छात्रों को अवश्य लाभ
होगा। मैं भविष्य विद्यालय के
विकास की कामना करता हूँ आर्य

29-11-14	डॉ० अनन्त नारायण भट्ट वैज्ञानिक	09868771939
	नाभिकीय औषधि एवं सम्बद्ध विज्ञान संस्थान	
	डी० आर० डी० ओ०, रक्षा मन्त्रालय	
	दिल्ली — 110054	

a महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़ गोरखपुर में D.S.T. Project के सम्बन्ध में आया। प्राचार्य डा० राव से वार्ता हुई। कालेज के विकास में आप द्वारा किये जा रहे अभिनव प्रयोग, कालेज की व्यवस्था को देखा जो सराहनीय है। हम कालेज की प्रगति की शुभ कामना करते हैं।

डा० एस० एन० सिंह, प्रोफेसर, प्रसार निदेशालय,	9450547719
न० दे० कृषि एवं प्रौ० वि० वि०, कुमारगंज, फैजाबाद	

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज
जंगल धूसड़, आज भी यह
महाविद्यालय अपने प्राचीन गरिमा
और प्रतिष्ठा को संजोए हुए है।
साफ-सफाई, अनुशासन और
पढ़ाई में यह अन्य विद्यालयों
के लिए एक आदर्श है।

Durgesh Srivastava

4/09/2015	दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव गोरखपुर, कर्मचारी - बैंक	9807823434

प्रो. अशोक कुमार
कुलपति

Prof. Ashok Kumar
Vice-Chancellor

दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर–273009 (उ0प्र0)

D.D.U. Gorakhpur University,
Gorakhpur – 273009 (U.P.)

दिनांक : 09–03–2015

संदेश

युगपुरुष **महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान–माला** (सप्त दिवसीय, 27 अगस्त से 2 सितम्बर 2014) के उद्घाटन समारोह में 'मुख्य अतिथि' के रूप में महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर द्वारा मुझे आमंत्रित किया गया। मैंने आमंत्रण स्वीकार कर 27 अगस्त 2014 को महाविद्यालय पहुँचा। यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि व्याख्यान–माला की तैयारी के साथ महाविद्यालय की सभी कक्षाएँ चल रही थीं। महाविद्यालय के प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष प्रो. यू.पी. सिंह एवं प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव के साथ मैं महाविद्यालय के पठन–पाठन की गतिविधियों का निरीक्षण करने के उद्देश्य से कक्षाओं की ओर बढ़ गया। लगभग सभी कक्षाओं में गया। 45 मिनट के इस निरीक्षण में महाविद्यालय में स्वच्छता और अनुशासन की अद्भुत झाँकी दिखी। घर की तरह साफ–सुथरा महाविद्यालय के भवन के फर्श, दीवाले, विशाल परिसर भी हो सकता है यह एहसास हुआ। एक भी विद्यार्थी टहलता नहीं दिखा, पुस्तकालय का वातावरण शान्त। बैठे शिक्षक–विद्यार्थी पठन–पाठन में ध्यानस्थ। हमारे प्रवेश करने पर कोई आपा–धापी नहीं। विद्यार्थी खड़े हुए और फिर बैठकर पढ़ने लगे। पूर्वी उत्तर प्रदेश का कोई महाविद्यालय अपने सभी विद्यार्थियों को प्रतिदिन व्याख्यान के सारांश की छायाप्रति उपलब्ध कराकर पठन–पाठन कराता है, यह कल्पना नहीं थी। इस महाविद्यालय के प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों के पास व्याख्यान के सारांश की छायाप्रति उपलब्ध थी। कई कक्षाएँ पावर प्वाइंट द्वारा पढ़ाई जा रही थी। पठन–पाठन की गुणवत्ता पर पूछ–ताछ में यह प्रमाणित हुआ कि यहाँ सप्ताह में एक दिन कक्षा विद्यार्थी पढ़ाता है, विद्यार्थियों का मासिक मूल्यांकन शिक्षक करते हैं, पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम–योजनानुसार कक्षाएँ पढ़ाई ही जा रही थीं, शिक्षकों का मूल्यांकन विद्यार्थी भी करते हैं, विद्यार्थियों की प्रगति आख्या, शिक्षक कार्यवृत्त का प्रतिमाह भरा जाना, शिक्षक आचार संहिता सब कुछ का आश्चर्यजनक ढंग से व्यवस्थित क्रियान्वयन। इसी बीच एक घंटी लगी और विद्यार्थी विशाल सभागार में बैठ गए। कार्यक्रम क्षण–अनुक्षण के अनुसार प्रारम्भ हुआ और वन्देमातरम् के साथ पूर्ण होते ही अगली घंटी लगी और विद्यार्थी कक्षाओं में। मानो अनुशासन एवं संस्कार में सधे विद्यार्थी किसी गुरुकुल की शोभा हों। अद्भुत–अद्वितीय।

समावर्तन संस्कार समारोह ऐसे महाविद्यालय की कार्य–संस्कृति का हिस्सा होगा, यह स्वाभाविक ही है। समावर्तन–संस्कार समारोह के अवसर पर स्नातक–स्नातकोत्तर की शिक्षा इस महाविद्यालय से पूर्ण कर रहे विद्यार्थियों को यशस्वी जीवन की मेरी हार्दिक शुभकामना। एक प्रतिमान महाविद्यालय संचालित कर वर्तमान उच्च शिक्षण–संस्थानों को आइना दिखाने का कार्य कर रहे महाविद्यालय परिवार को भी मेरी हार्दिक बधाई।

(प्रो0 अशोक कुमार)
कुलपति

☎ : 0551-2201577 (O), 2340458 (R), Fax : 0551-2330767 (O), 2340459 (R), Email : mamsjpr@gmail.com

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. अशोक कुमार 27 अगस्त 2014 को महाविद्यालय के साप्ताहिक व्याख्यान-माला के उद्घाटन में आये। समावर्तन समारोह हेतु शुभकामना संदेश के रूप में उनके द्वारा महाविद्यालय का मूल्यांकन।

हाँ! हमने बदली है इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा की तस्वीर

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध लगभग **370** स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों, **31** सरकार से सहायता प्राप्त एवं **11** राजकीय महाविद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता, नित–नूतन प्रयोग और सफलता की ओर निरन्तर बढ़ते कदमों ने अन्य महाविद्यालयों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा के प्रयत्न की ओर **प्रेरित किया है**। यह तथ्य उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय किसी भी निष्पक्ष समीक्षक–कर्ता से प्रमाणित किया जा सकता है।

हमारे प्रयोग कई महाविद्यालयों में प्रारम्भ

- गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ महाविद्यालय, चौक बाजार, महराजगंज
- महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय, रामदत्तपुर, गोरखपुर
- दिग्विजयनाथ पी.जी. कालेज, गोरखपुर
- चन्द्रकान्ती रमावती महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर
- राधिका महाविद्यालय, करवल मझगांवां, गगहा, गोरखपुर
- नवल्स स्नातकोत्तर पी.जी. कालेज, कुसम्ही, गोरखपुर
- बुद्ध महाविद्यालय रतसिया कोठी, देवरिया
- राजेन्द्र प्रसाद ताराचन्द महाविद्यालय, निचलौल, महराजगंज

जब महामहिम को कहना पड़ा

यहाँ पर महाविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता, अभिनव प्रयोग एवं अनुशासन की जो जानकारी मुझे कुलपति महोदय से प्राप्त हुई है, इस आधार पर मुझे लगता है किसी को जंगल में मंगल देखना हो तो यहाँ आना चाहिए। जंगल में मंगल कैसा होता है यह दिखाने के लिए मैं उत्तर प्रदेश के सभी कुलपतियों की बैठक इस महाविद्यालय में कराने की सोच रहा हूँ।

20 जून, 2015

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम

लोकार्पण समारोह के अवसर पर

श्री राम नाईक

माननीय राज्यपाल

उत्तर प्रदेश

हमारी
मुख्य कमाई तो वह है
जिनका मूल्यांकन नहीं
किया जा सकता -मात्र
महसूस किया जा
सकता है

-प्राचार्य

दिनांक 8 अक्टूबर 2010

समय रात्रि 10.30 बजे

मेरे मोबाइल की घंटी बजती है।

मोबाइल पर 'प्रणाम' का स्वर और पूछा जाता है–'सर कैसे हैं'।

प्राचार्य–ठीक हूँ। आप कौन

आवाज – सर मैं अमर नाथ बोल रहा हूँ।

प्राचार्य–कौन अमर नाथ ?

आवाज–सर मैंने 2008 में आपके महाविद्यालय से बी.एस–सी. पास कर इलाहाबाद में तैयारी कर रहा हूँ। आपको यह सूचना देनी थी कि–**मैंने अपना बाल आज छोटा करा दिया है। मुझे लगा कि इसकी पहली सूचना आपको देनी चाहिए।**

मेरे सामने तीन चार वर्ष पूर्व उस विद्यार्थी का चेहरा आ जाता है–जिसे मैं जब देखता था उससे उसके लम्ब बाल छोटा करने को कहता था। हर बार उसका जवाब होता था–'सर आप नहीं जानते लम्बे बालों से मैं स्मार्ट दिखता हूँ।'

वार्ता अनौपचारिक ढंग से आगे बढ़ जाती है..........

–प्राचार्य

बबिता सिंह, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष
2008 में बी.एस–सी. उत्तीर्ण

दिनांक – 25 जून 2011

समय – रात्रि 9.40 बजे

मेरे मोबाइल पर आवाज–प्रणाम सर, मैं बबिता बोल रही हूँ।

प्राचार्य – कहो कैसी हो? तैयारी कैसी चल रही है (सिविल परीक्षा की तैयारी इलाहाबाद में रहकर)।

बबिता – अच्छी चल रही है, कभी–कभी मन बहुत घबड़ाने लगता है।

प्राचार्य – समझाने और आत्म विश्वास बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित करने का प्रयत्न एवं एम.एस–सी. करने का सुझाव।

बबिता – सर ठीक है।

प्राचार्य – कहो कैसे फोन किया।

बबिता – सर ऐसे मन घबड़ा रहा था, तो आप को फोन कर लिया।

–प्राचार्य

मोबाइल पर आवाज

मनीष – 'सर कैसे हैं'

प्राचार्य – ठीक हूँ, क्या हाल है

मनीष – सर ठीक है

प्राचार्य – कैसे फोन किया

मनीष – सर बस आपकी याद

आ रही थी

ऐसे फोन अनेकों बार

एतान्यपि तु कर्माणि सङ्ंग त्यकत्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति में पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम।।

श्रीमद्भगवत्गीता, 18.06

सभी प्रकार के कर्तव्यकर्मों को आसक्ति और फलों का त्याग करके अवश्य करना चाहिए, यह मेरा निश्चय किया हुआ उत्तम मत है।

अधिकांश विद्यार्थी जब मोबाइल पर फोन कर मेरा और महाविद्यालय का हाल–चाल पूछते हैं और जब यह कहते हैं कि–**'ऐसे ही आप से बात करने का मन कर रहा था'**। मुझे अथवा मेरे 'शिक्षक' को जीवन की वह कमाई प्राप्त होती है जिसकी कीमत नहीं लगाई जा सकती–**बस एहसास किया जा सकता है।**

मैं दस वर्ष के महाविद्यालयी कार्य और ईश्वर द्वारा प्राप्त परिणाम से पूर्णतः सन्तुष्ट हूँ। ईश्वर बस इसे बनाए रखें।

–प्राचार्य

- **सामर्थ्य** – महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् एवं प्रबन्ध समिति की स्पष्ट दृष्टि।
- **कमजोरी** – ईश्वर को समर्पित भावयुक्त शिक्षकों–कर्मचारियों की कमी।
- **अवसर** – प्रतिमान शिक्षण संस्था के रूप में क्रमिक विकास।
- **चुनौती** – स्थापित एवं विकसित स्वस्थ परम्पराओं एवं शैक्षिक गुणवत्ता को बनाये रखना।

भावी योजना

1. अभिगृहीत गाँवों को आदर्श ग्राम बनाना।
2. स्वायतशासी महाविद्यालय की मान्यता प्राप्त करना।

कोई कार्य चाहे कितना भी अच्छा किया जाय, उससे और अच्छा करने की गुन्जाइश सदा बनी रहती है।

महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज
गोरक्षपीठाधीश्वर
प्रबन्धक /सचिव

परिणामतः

हम जितना आगे बढ़ रहे होते हैं, लक्ष्य भी निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है।

डॉ. प्रदीप कुमार राव
प्राचार्य

भारत

माता

की

जय!

भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखना भी भारतीय शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। हिन्दू धर्म, उसके शास्त्र और हिन्दू संस्कृति की रक्षा होनी चाहिए। प्रत्येक भारतीय में भारत की भाषाओं, धर्म तथा संस्कृति के प्रति आदर भाव होना चाहिए। राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति, त्याग तथा सेवाभाव से युक्त होकर हम अपना जीवन सार्थक करने के साथ ही देश का गौरव बढ़ाए, यही हमारी शिक्षा का परम उद्देश्य है।

—मदन मोहन मालवीय